

अंक ७

संस्कृत-पाठ-माला।

(संस्कृत भाषाका अध्ययन करनेका सुगम उपाय।)

सप्तम भाग।

लेखक और प्रकाशक।

श्रीपाद दामोदर सातवळेकर,

स्वाध्याय मंडल, औंध (जि. सातारा)

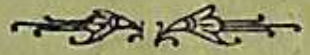
SRI RAMAKRISHNA ASHRAM
LIBRARY, SRINAGAR
Accession No-3014
Date ... ...

प्रथम वार १०००

संवत् १९८२, शके १८४७, सन १९२५

मूल्य ।-) पांच आने।

स्वाध्यायके ग्रंथ ।



[१] यजुर्वेदका स्वाध्याय ।

(१) य. अ. ३० की व्याख्या । नरमेध ।
मनुष्योंकी सच्ची उन्नतिका सच्चा साधन । १)

(२) य. अ. ३२ की व्याख्या । सर्वमेध ।
" एक ईश्वरकी उपासना । " मू. ॥)

(३) य. अ. ३६ की व्याख्या । शांतिकरण ।
" सच्ची शांतिका सच्चा उपाय । " मू.॥)

[२] देवता-परिचय-ग्रंथमाला ।

(१) रुद्र देवताका परिचय । मू. ॥)
(२) ऋग्वेदमें रुद्र देवता । मू. ॥=)
(३) ३३ देवताओंका विचार । मू. =)
(४) देवताविचार । मू. =)
(५) वैदिक अग्नि विद्या । मू. १॥)

[३] योग-साधन-माला ।

(१) संध्योपासना । मू. १॥)
(२) संध्याका अनुष्ठान । मू. ॥)
(३) वैदिक–प्राण–विद्या । मू. १)
(४) ब्रह्मचर्य । मू. १।)
(५) योगसाधन की तैयारी । मू. १)
(६) योग के आसन । मू. २)
(७) सूर्यभेदन व्यायाम । मू. ।=)



अंक ७

संस्कृत-पाठ-माला ।

[संस्कृत भाषाका अध्ययन करनेका सुगम उपाय ।]

सप्तम भाग ।

लेखक और प्रकाशक ।

श्रीपाद दामोदर सातवळेकर,

स्वाध्यायमंडल, औंध (जि. सातारा.)

प्रथमवार १०७०

संवत् १९८२, शक १८४७, सन १९२५.

मूल्य ।-] पांच आने ।

नामोंके रूप ।



नामोंके सातों विभक्तियोंके रूप बनानेकी रीति इस पुस्तकमें देनेका प्रारंभ किया है । पाठक इसका ठीक अध्ययन करेंगे तो उनको संस्कृत वाक्य बनानेका उत्तम अभ्यास हो जायगा ।

साथ साथ क्रियाओंके रूपभी बताये जाते हैं । इनके अध्ययनसे पाठक क्रियापद स्वयं बनाकर उनका उपयोग कर सकते हैं ।

आशा है कि पाठक इसका योग्य अध्ययन करके लाभ प्राप्त करेंगे ।

स्वाध्यायमंडल,
औंध (जि. सातारा)
२०।५।२५

लेखक,
श्रीपाद दामोदर सातवळेकर.

मुद्रक—रा. रा. **चिंतामण सखाराम देवळे,** मुंबईवैभव प्रेस, सर्व्हेंट्स ऑफ इंडिया सोसायटीज् होम, सँडर्स्ट रोड, गिरगांव–मुंबई.

प्रकाशक—**श्रीपाद दामोदर सातवळेकर,** स्वाध्यायमंडल, औंध (जि. सातारा).

ॐ

संस्कृत-पाठ-माला ।

सप्तम भाग ।

पाठ १

संस्कृतमें " **वचन** " तीन हैं । भाषामें केवल दो ही हैं । एक संख्याको " **एकवचन** " कहते हैं, और अनेक संख्याको " **अनेकवचन** " कहते हैं । जैसे–

एकः अश्वः=एक घोडा (एकवचन)

बहवः अश्वाः=बहुत घोडे (अनेकवचन)

परंतु संस्कृतमें इनके बीचमें " **द्विवचन** " भी और एक होता है जैसा–

एकः गजः=एक हाथी (एकवचन)

द्वौ गजौ =दो हाथी (द्विवचन)

बहवः गजाः=बहुत हाथी (बहुवचन)

हिंदी भाषाके व्यवहारमें और संस्कृत भाषाके व्यवहारमें यह वचनोंका भेद ध्यानमें धरने योग्य है ।

इस समयतक पाठक एकवचनके रूप बनानेकी योग्यता प्राप्त कर चुके हैं, और वैसे रूप बनाकर कई वाक्यभी पाठक बनाने लगे हैं। इसलिये अब तीनों वचनोंके रूप बनानेकी रीति बतानेका विचार किया है। आशा है कि पाठक इस पाठका योग्य अभ्यास करके शब्दोंके रूप बनानेकी योग्यता प्राप्त करेंगे।

इस पाठमें अकारान्त पुल्लिंग शब्दोंके सातों विभक्तियोंके और तीनों वचनोंके रूप इस प्रकार होते हैं—

गजः (हाथी)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	गजः	गजौ	गजाः
संबोधन	(हे) गज !	(हे) गजौ !	(हे) गजाः !
द्वितीया	गजं	गजौ	गजान्
तृतीया	गजेन	गजाभ्यां	गजैः
चतुर्थी	गजाय	गजाभ्यां	गजेभ्यः
पंचमी	गजात्	गजाभ्यां	गजेभ्यः
षष्ठी	गजस्य	गजयोः	गजानां
सप्तमी	गजे	गजयोः	गजेषु

इनके अर्थ निम्नलिखित होते हैं—

प्रथमा
१ गजः=एक हाथी
२ गजौ=दो हाथी
३ गजाः=बहुत हाथी

संबोधन	१ गज=हे एक हाथी ! २ गजौ=हे दो हाथिओ ! ३ गजाः=हे बहुत हाथिओ !
द्वितीया	१ गजं=एक हाथीको २ गजौ=दो हाथियोंको ३ गजान्=बहुत हाथियोंको
तृतीया	१ गजेन=एक हाथीने २ गजाभ्यां=दो हाथियोंने ३ गजैः=बहुत हाथियोंने
चतुर्थी	१ गजाय=एक हाथीके लिये २ गजाभ्यां=दो हाथियोंके लिये ३ गजेभ्यः=बहुत हाथियोंके लिये
पंचमी	१ गजात्=एक हाथीसे २ गजाभ्यां=दो हाथियोंसे ३ गजेभ्यः=बहुत हाथियोंसे
षष्ठी	१ गजस्य=एक हाथीका २ गजयोः=दो हाथियोंका ३ गजानां=बहुत हाथियोंका
सप्तमी	१ गजे=एक हाथीमें २ गजयोः=दो हाथियोंमें ३ गजेषु=बहुत हाथियोंमें

पूर्वभागोंमें अकारान्त पुल्लिंग शब्द बहुत आगये हैं। उनके रूप पाठक स्वयं इस रीतिसे बना सकते हैं। एक वचन के रूप तो पाठक स्वयं बना सकते ही हैं।

द्विवचन के रूप=प्रथमा, संबोधन और द्वितीया के समान ही हैं। तृतीया, चतुर्थी और पंचमी के भी एक जैसे होते हैं। तथा षष्ठी और सप्तमी के भी एकसे होते हैं। पाठक इस समता को ध्यानमें धरेंगे तो द्विवचनके रूप बनाना उनके लिये सुगम हो जायगा।

बहुवचनके रूप=प्रथमा और संबोधन के परस्पर समान हैं। चतुर्थी और पंचमी के भी समान हैं।

यह समानता पाठकों के ध्यानमें आनेके लिये एक और शब्दके रूप बताये जाते हैं—

हस्तः (हाथ)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
१	हस्तः	हस्तौ	हस्ताः
सं०	(हे) हस्त !	(हे) ”	(हे) ”
२	हस्तं	”	हस्तान्
३	हस्तेन	हस्ताभ्यां	हस्तैः
४	हस्ताय	”	हस्तेभ्यः
५	हस्तात्	”	”
६	हस्तस्य	हस्तयोः	हस्तानां
७	हस्ते	”	हस्तेषु

जो रूप ऊपरके रूपके समान होते हैं वहां (”) यह चिन्ह रखा है।

वाक्य ।

सः मनुष्यः पादाभ्यां गच्छति=वह मनुष्य (दो) पावों से जाता है।

अहं कर्णाभ्यां शृणोमि=मैं (दो) कानोंसे सुनता हूं।

गजेभ्यः जलं देहि=(बहुत) हाथियोंके लिये जल दो ।

तत्र गजानां पंक्तिः अस्ति=वहां (बहुत) हाथियोंकी पंक्ति है ।

सः बालः शब्दाना प्रयोगं जानाति=वह बालक (बहुत) शब्दोंका प्रयोग जानता है ।

अश्वानां शब्दं शृणु=(बहुत) घोडोंका शब्द सुन ।

सः नराणां पालकः अस्ति=वह मनुष्योंका पालक है ।

पाठ २

इस पाठमें भी पुनः अकारान्त पुल्लिंग शब्दोंके रूप बनानेकी रीति बताते हैं—

नर (मनुष्य)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
१	नरः	..... नरौ	नराः
सं०	(हे) नर!	.....(हे) ,,	.....(हे) ,,
२	नरं	..... ,, ...	नरान्
३	नरेण	.....नराभ्यां	नरैः
४	नराय	..... ,, ...	नरेभ्यः

५ नरात् ..... ,, ... ,,
६ नरस्य ..... नरयोः .....नराणां
७ नरे ..... ,, ... नरेषु

जो रूप समान होते हैं उन स्थानपर (,,) यह चिन्ह रख दिया है। पाठक इनको ठीक मननपूर्वक देखें और ध्यानमें रखें। यह स्मरण रखनेसे पाठक बहुतही आसानीसे विभक्तियोंके रूप बना सकते हैं।

इनका अब उपयोग देखिये—

" प्रथमा "

एकः नरः तत्र अस्ति=एक मनुष्य वहां है।
द्वौ नरौ तत्र न स्तः=दो मनुष्य वहां नहीं हैं।
बहवः नराः अत्र सन्ति=बहुत मनुष्य यहां हैं।

" संबोधन "

हे नर ! त्वं किं करोषि ?=हे एक मनुष्य ! तू क्या करता है ?
हे नरौ ! कुत्र गच्छतः=हे दो मनुष्यो ! आप कहां जाते हैं ?
हे नराः ! मद्वचनं शृणुत=हे बहुत मनुष्यो ! मेरा वचन सुनिये।

" द्वितीया। "

धनं पुरुषार्थिनं नरं आगच्छति=धन पुरुषार्थी मनुष्यके प्रति आता है।

स पुरुषः नरौ प्रति गच्छति=वह मनुष्य (दो) मनुष्योंके प्रति जाता है।

त्वं तान् नरान् अत्र आनय=तू उन (बहुत) मनुष्यों को यहां ला ।

" तृतीया "

तेन नरेण इदानीं किं कृतम् ?=उस मनुष्यने अब क्या किया ?

नराभ्यां न किमपि कृतम्=(दो) मनुष्योंने नहीं कुछ भी किया ।

सर्वैः नरैः किं उक्तम् ?=सब मनुष्योंनें क्या कहा ?

" चतुर्थी "

त्वं तस्मै नराय किं ददासि ?=तू उस मनुष्यके लिये क्या देता है ।

नराभ्यां उदकं देहि=(दो) मनुष्यों के लिये जल दो ।

सः नरेभ्यः अन्नं ददाति=वह (बहुत) मनुष्यों के लिये अन्न देता है ।

" पंचमी "

तस्मात् नरात् मया धनं लब्धं=उस मनुष्यसे मैंने धन प्राप्त किया ।

ताभ्यां नराभ्यां त्वं किं इच्छसि=उन (दो) मनुष्योंसे तू क्या चाहता है ?

नीचेभ्यः नरेभ्यः त्वं अत्र आगच्छ=नीच मनुष्यों से तू यहां आ ।

" षष्ठी "

तस्य नरस्य प्रशस्तं रूपं अस्ति=उस मनुष्यका प्रशस्त रूप है।

तयोः नरयोः इदानीं युद्धं जातं=उन (दो) मनुष्यों का अब युद्ध हुआ।

इदानीं तत्र नराणां महान् समूहः संमिलितः=अब वहा (बहुत) मनुष्योंका बडा समूह संमिलित हुआ है।

" सप्तमी "

तस्मिन् नरे कः विशेषः ?=उस मनुष्यमें क्या विशेष है ?

तयोः नरयोः न कः अपि विशेषः=उन (दो) मनुष्योंमें कोई विशेष नहीं है।

नरेषु विद्वान् पुरुषः प्रशस्यते=मनुष्योंमें विद्वान् पुरुष प्रशंसित होता है।

अकारान्त पुल्लिंगी नर शब्दके सातों विभक्तियों के रूप वाक्योंमें इसी प्रकार प्रयुक्त किये जाते हैं। पाठक इसी प्रकार रूप बनाकर उन रूपोंसे अनेक संस्कृत के वाक्य बनानेका अभ्यास करें।

अकारान्त पुल्लिंग शब्द।

स्वाध्यायः=अपना अध्ययन पाठ,
सज्जनः=सत्पुरुष
आर्यः=आर्य
कोविदः=ज्ञानी
त्यागः=दान
जयः=विजय

वर्णः=रंग	**बुधः**=विद्वान्
आश्रमः=आश्रम	**आचार्यः**=आचार्य
त्यागः=यज्ञ	**उपवासः**=उपवास

वाक्य ।

त्वं किं स्वाध्यायं न करोषि ?=तू क्यों स्वाध्याय नहीं करता है ?

तव गुरुः सज्जनः अस्ति=तेरा अध्यापक सज्जन है ।

आर्येण किं अधीतम् ?=आर्यने क्या अध्ययन किया ?

शास्त्रेषु कोविदः अत्र न कः अपि अस्ति=शास्त्रोंमें ज्ञानी यहां कोई भी नहीं है ।

यः धनस्य त्यागं करोति स एव त्यागी इति उच्यते= जो धनका दान करता है वही त्यागी कहा जाता है ।

अहं जयाय यत्नं करोमि=मैं जयके लिये यत्न करता हूं ।

अद्य अहं उपवासं करोमि=आज मैं उपवास करता हूं ।

पाठ ३

पूर्व दो पाठों में शब्दोंके तीनों वचनोंका थोडासा विचार किया है । नामोंके वचनोंके साथ साथ क्रियाओंकाभी विचार होना आवश्यक है इस लिये इस पाठमें क्रियाओंका विचार थोडासा किया जाता है । जिस प्रकार नामोंके विभ-

कितरूपोंमें एकवचन द्विवचन और बहुवचन ऐसे तीन वचन होते हैं, ठीक उस प्रकार क्रियाओंमें भी तीन वचन होते हैं। जैसा—

वर्तमान काल।

" वद् " (बोलना)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
उत्तम पुरुष	वदामि	वदावः	वदामः
मध्यम पुरुष	वदसि	वदथः	वदथ
तृतीय पुरुष	वदति	वदतः	वदन्ति

१ **वर्तमानकाल** उसको कहते हैं कि जो इस समयका वर्णन करता है। वर्तमान कालके ये रूप हैं । जैसा—" वदामि " का अर्थ " मैं इस समय बोलता हूं। "

२ **भूतकाल** वह होता है जो भूत अर्थात् गत काल की स्थिति बताता है।

३ **भविष्यकाल** वह होता है कि जो आगे आनेवाला होता है।

वर्तमान कालके रूप ऊपर दिये हैं, भूत और भविष्य कालके रूप पीछेसे दिये जांयगे।

ऊपर तीन पुरुष दिये हैं, उनका अर्थ यह है—

उत्तम पुरुष=" मैं " यह अर्थ बतानेवाला। इसको भाषामें "**प्रथम पुरुष**" भी कोई कोई कहते हैं।

मध्यम पुरुष="तू" यह अर्थ बतानेवाला। इसको भाषामें "**द्वितीय पुरुष**" भी कहते हैं।

तृतीय पुरुष="वह" अथवा "तीसरा" यह अर्थ बतानेवाला। इसको संस्कृतमें "प्रथम पुरुष" कहते हैं और भाषामें "**तृतीय पुरुष**" कहते हैं।

वाक्य बनानेके पूर्व (अहं) मैं तथा (त्वं) तू के तीनों वचनोंके रूप जाननेकी आवश्यकता है। इस लिये वे रूप यहां देते हैं—

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
(उत्तम पुरुष)	**अहं**	**आवां**	**वयं**
प्रथमा	(मैं)	(हम दो)	(हम बहुत)
(मध्यम पुरुष)	**त्वं**	**युवां**	**यूयं**
प्रथमा	(तू)	(तुम दो)	(तुम सब)
(तृतीय पुरुष)	**सः**	**तौ**	**ते**
प्रथमा	(वह)	(वे दो)	(वे सब)

तृतीय पुरुषके स्थानपर किसी भी नामका उपयोग किया जाता है, परंतु उत्तम और मध्यम पुरुषोंके स्थानपर उक्त सर्वनामोंके शब्दोंकाही प्रयोग होता है। उक्त क्रियाके रूपोंके साथ एक एक शब्द उत्तम मध्यम और तृतीय पुरुषके लगकर वाक्य बनते हैं। उत्तम पुरुषकी क्रियाओंके साथ क्रमशः वचनोंके अनुसार उत्तम पुरुषके सर्वनाम तथा अन्योंके साथ अन्य लगते हैं। देखिये—

" उत्तम पुरुष । "

१ अहं वदामि=मैं बोलता हूं ।

२ आवां वदावः=हम (दो) बोलते हैं ।

३ वयं वदामः=हम (सब) बोलते हैं ।

" मध्यम पुरुष । "

१ त्वं वदसि तू बोलता है ।

२ युवां वदथः=तुम (दो) बोलते हैं ।

३ यूयं वदथ=तुम (सब) बोलते हैं ।

" तृतीय पुरुष । "

१ सः वदति=वह बोलता है ।

२ तौ वदतः=वे (दो) बोलते हैं ।

३ ते वदन्ति=वे (सब) बोलते हैं ।

—किंवा—

१ रामः वदति=राम बोलता है ।

२ रामलक्ष्मणौ वदतः=राम लक्ष्मण बोलते हैं ।

३ मनुष्याः वदन्ति=(सब) मनुष्य बोलते हैं ।

यही रीति ठीक समझमें आनेके लिये और थोडे वाक्य यहां देते हैं—

१ अहं गच्छामि=मैं जाता हूं ।

२ आवां गच्छावः=हम (दो) जाते हैं।
३ वयं गच्छामः=हम (सब) जाते हैं।

---

१ त्वं गच्छसि=तू जाता है।
२ युवां गच्छथः=तुम (दो) जाते हैं।
३ यूयं गच्छथ=तुम (सब) जाते हैं।

---

१ सः गच्छति=वह जाता है।
२ तौ गच्छतः=वे (दो) जाते हैं।
३ ते गच्छन्ति=वे (सब) जाते हैं।

—किंवा—

१ मनुष्यः गच्छति=मनुष्य जाता है।
२ मनुष्यौ गच्छतः=(दो) मनुष्य जाते हैं।
३ मनुष्याः गच्छंति=(सब) मनुष्य जाते हैं।

प्रत्येक वचन के रूप के साथही क्रियाका उसी वचन का रूप प्रयुक्त होता है। भाषामें क्रियाके भी दो वचन ही केवल हैं, परंतु संस्कृत तीन वचन हैं। पाठक इनका उपयोग विशेष विचार से देखें और स्मरण रखें, ता कि आगे अशुद्धि होने न पावे। यह विषय अत्यंत महत्वका है इसलिये विशेष ख्यालसे स्मरण करना चाहिये।

पाठ ४

अब इस पाठमें कुछ अकारान्त पुल्लिंग शब्द देते हैं उनके रूप पूर्व लिखे नियमके अनुसार ही कीजिये—

शब्द (अकारान्त पुल्लिंग)

ग्रामः=गांव
आपणः=बाजार
लेखकः=लेखक
पर्वतः=पहाड
मार्गः=मार्ग, रास्ता
चरणः=पांव
मूषकः=चूहा
वत्सः=बछडा
अपूपः=पूडा, बडा.
सूपः=दाल
ओदनः=(पके) चावल
रथः=रथ, गाडी
अर्भकः=लडका
प्रसादः=कृपा
रक्षकः=रखवाला
सेवकः=नौकर

अहं ग्रामं गच्छामि=मैं ग्रामको जाता हूं ।
सः ग्रामात् आगच्छति=वह गांवसे आता है ।
तौ ग्रामं गच्छतः=वे (दो) गांवको जाते हैं ।
ते मनुष्याः ग्रामात् आगच्छन्ति=वे मनुष्य ग्रामसे आते हैं ।
सेवकः आपणं गच्छति=नौकर बाजारको जाता है ।
सेवकौ आपणं गच्छतः=(दो) नौकर बाजारको जाते हैं ।
सेवकाः आपणं गच्छन्ति=(सब) नौकर बाजारको जाते हैं ।

तव लेखकः कदा आगमिष्यति=तेरा लेखक कब आवेगा ?

मम लेखकौ अधुना आगमिष्यतः=मेरे (दो) लेखक अब आवेंगे ।

ते सर्वे पुरुषाः श्वः आगमिष्यन्ति=वे सब पुरुष कल आवेंगे ।

हिमपर्वतस्य मार्गं त्वं जानासि किम्=हिमपर्वतका मार्ग तू जानता है क्या ?

तव वत्सः किं करोति=तेरा बछडा क्या करता है ?

मम द्वौ वत्सौ धावतः=मेरे दोनों बछडे दौडते हैं ।

तस्य पुत्रः तत्र धावति=उसका लडका वहां दौडता है ।

मम सर्वे पुत्राः इदानीं धावन्ति=मेरे सब पुत्र अब दौडते हैं ।

वाक्य ।

यदि यह सब वचनोंका पाठ आपके समझमें आगया होगा, तो आपको निम्नलिखित वाक्य बिना आयास समझमें आसकते हैं ।

त्वं कुत्र गच्छसि ? युवां कुत्र गच्छथः ? यूयं कदा अत्र आगच्छथ ? अहं तत्र न गच्छामि । आवां तत्र न गच्छावः । वयं कदापि तत्र न गच्छामः ।

तत्र त्वं किं न गच्छसि ? तत्र युवां किं न गच्छथः ? तत्र यूयं किं न गच्छथ ? यत् अहं पठामि तत् त्वं किं न वदसि ? यत् अहं न पठामि तत् युवां किं वदथः ? यत् अहं पठामि तत् यूयं किं वदथ ?

रामः इदानीं उद्यानं गच्छति । रामलक्ष्मणौ इदानीं उद्यानं गच्छतः । रामलक्ष्मणभरताः इदानीं उद्यानं गच्छन्ति ।

अद्य सः मनुष्यः आपणं गच्छति । अद्य तौ मनुष्यौ आपणं गच्छतः । अद्य ते मनुष्याः आपणं गच्छन्ति ।

श्वः अहं तत्र नैव गमिष्यामि । श्वः आवां तत्र नैव गमिष्यावः । श्वः वयं तत्र नैव गमिष्यामः ।

कदा तौ पाठशालां गच्छतः ? कदा ते ग्रामं गच्छन्ति ? कदा सः नगरं गच्छति ?

स सर्वदा नगरात् नगरं किं गच्छति ? तौ सदा ग्रामात् ग्रामं किं गच्छतः ? ते सर्वदा ग्रामात् ग्रामं किं गच्छन्ति ?

बालकः उद्यानं कदा गच्छति ? द्वौ बालकौ उद्यानं गत्वा पश्चात् आपणं गच्छतः । सर्वे बालकाः अध्ययनस्य पश्चात् भ्रमणाय गच्छन्ति ।

त्वं सायंकाले कुत्र गमिष्यसि ? युवां प्रातःसमये कुत्र गमिष्यथः ? यूयं मध्यान्हसमये अत्र किं न आगच्छथ ?

अहं रात्रौ गुरोः गृहं गच्छामि । आवां दिनसमये पाठशालां गच्छावः । वयं अनध्यायसमये कुत्र अपि न गच्छामः ।

यथा अहं तत्र गच्छामि तथा त्वं अपि तत्र आगच्छसि किम् ? अहं तत्र कथं गन्तुं शक्नोमि ? यदि त्वं आगमिष्यसि तर्हि अहं अपि आगमिष्यामि ।

पाठक इन वाक्योंमें नामों और क्रियाओंके वचनोंका संबंध देखें। एकवचनके नामोंके साथ एकवचनकी क्रिया आती है, द्विवचनके साथ द्विवचनकी और बहुवचनके साथ बहुवचन की आती है। यह स्मरण रखना चाहिये।

पाठ ५.

इस पाठमें अकारान्त नामों के कुछ प्रत्यय देते हैं, इनको नामोंके साथ लगानेसे विभक्ति के रूप सुगमतासे बनाये जा सकते हैं—

विभक्तियों के प्रत्यय।

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
१	—:	—औ	—अः
सं०	—×	—"	—"
२	—म्	—"	—अन्
३	—इन	—आभ्यां	—ऐः
४	—आय	—"	—इभ्यः
५	—आत्	—"	—"
६	—स्य	—योः	—अनां
७	—इ	—"	—इषु

इन प्रत्ययोंको अकारान्त पुल्लिंग नामों के साथ लगाकर विभक्तियों के रूप कीजिये—

१	मोदकः	मोदकौ	मोदकाः
सं०	(हे) मोदक	(हे)"	(हे)"
२	मोदकं	"	मोदकान्
३	मोदकेन	मोदकाभ्यां	मोदकैः
४	मोदकाय	"	मोदकेभ्यः
५	मोदकात्	"	"
६	मोदकस्य	मोदकयोः	मोदकानां
७	मोदके	"	मोदकेषु

पाठक इन नामों में प्रत्ययोंका अनुभव करें और इसप्रकार प्रत्ययोंका स्मरण रख के नामों के रूप बनानेका प्रयत्न करें। एक वार यह विधि ठीक समझमें आगई तो फिर कोई कठिनता नहीं रहेगी।

अब कुछ अकारान्त पुल्लिंग शब्द कंठ कीजिये और उनके रूप पूर्ववत् बनाइये—

अकारान्त पुल्लिंग शब्द।

आम्रः=आम
वेदः=वेद
दण्डः=सोटी
लोभः=लोभ
वासः=रहना
स्वरः=आवाज
जनः=मनुष्य
वृक्षः=वृक्ष
मंत्रः=मंत्र
धूम्रः=धूंआं
कुमारः=लडका
समुद्रः=सागर
रसः=रस
इन्द्रः=राजा, प्रमुख

वाक्य ।

अहं आम्रं खादामि=मैं आम खाता हूं ।

आवां आम्रान् खादावः=हम (दो) आमोंको खाते हैं ।

वयं आम्रौ खादामः=हम (सब) दो आम खाते हैं ।

पाठक इसमें एक विशेष बात देखें । प्रत्येक वाक्य में "**कर्ता**" होता है । क्रिया का करनेवाला कर्ता होता है । उक्त वाक्यों में खानेकी क्रिया करनेवाला शब्द कर्ता है । प्रथम वाक्यमें "**अहं**" यह कर्ता है । कर्ताके वचनके अनुसारही क्रियाके वचन होते हैं । प्रथम वाक्यमें कर्ताका एकवचन है इसकारण क्रियाभी एकवचनी होगई । द्वितीय वाक्यमें कर्ताका द्विवचन है इसलिये क्रिया द्विवचनी होगई और तृतीय वाक्यमें कर्ता बहुवचनी है इसलिये क्रिया भी बहुवचनी होगई है । इसी प्रकार कर्ताके वचनके अनुसार क्रियाका वचन होना चाहिये ।

कर्ता और क्रिया इन दो पदोंको छोडनेसे जो उक्त वाक्योंमें तीसरा शब्द है उसको "**कर्म**" कहते हैं । कर्ता जो कार्य करता है, उस कार्यका परिणाम जिस पदार्थपर होता है उसका नाम कर्म होता है ।

कई क्रियाएं कर्मके साथ होती हैं उनको "**सकर्म क्रियापद**" कहते हैं तथा कई क्रियाएं कर्मके विना होती हैं उनको "**अकर्म क्रियापद**" कहते हैं । इन दोनोंके उदाहरण देखिये–

सकर्मक्रियापद ।

रामः आम्रं भक्षयति=राम आम खाता है ।

विष्णुः विश्वं धारयति=विष्णु विश्व धारण करता है ।

कृष्णः युद्धं करोति=कृष्ण युद्ध करता है ।

मनुष्यः जलं पिबति=मनुष्य जल पीता है ।

सः पुस्तकं नयति=वह पुस्तक ले जाता है ।

त्वं पाठं पठसि=तू पाठ पढता है ।

ये क्रियापद सकर्मक हैं क्यों कि इन क्रियाओंको कर्मकी अपेक्षा रहती है । यदि केवल " **सः पठति** " इतनाही कहा जाय तो प्रश्न हो सकता है कि " क्या पढता है " इस प्रश्नके उत्तर आने अर्थात् " कर्म " बताने तक समाधानही नहीं होता । इस लिये ये क्रियापद सकर्मक कहलाते हैं अब " अकर्मक क्रियापद " देखिये ।

अकर्मक क्रियापद ।

सः अस्ति=वह है ।

अहं धावामि=मैं दोडता हूं ।

सः तिष्ठति=वह ठहरता है ।

सः भवति=वह होता है ।

ये क्रियापद अकर्मक हैं क्यों कि किसी भी अन्य कर्मकी अपेक्षा इन क्रियाओंको नहीं है । " **धावति** " कहने मात्रसे क्रियाका पूर्ण अर्थ ज्ञात होता है । उस प्रकार " खादति " नहीं है क्योंकि

इस क्रियाके उच्चारके साथ खानेका पदार्थभी कहना आवश्यक होता है। पाठक इस बातका विचार करें और समझें कि ये क्रियाओंके भेद कैसे हैं। आगे इस विषयकी गलती न हो।

पाठ ६

इस पाठमें क्रियापदोंके प्रत्यय देते हैं उनको लगाकर क्रियापदोंके रूप पाठक बना सकते हैं—

वर्तमान काल।

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
उत्तम०	—मि	—वः	—मः
मध्यम०	—सि	—थः	—थ
तृतीय०	—ति	—तः	—अन्ति

जिन प्रत्ययोंके प्रारंभमें "म अथवा व" होते हैं उनके पूर्वके अकार का आ होता है। जैसा—

१	गच्छामि	गच्छावः	गच्छामः
२	गच्छसि	गच्छथः	गच्छथ
३	गच्छति	गच्छतः	गच्छन्ति

वाक्य।

अहं गच्छामि। आवां गच्छावः। वयं गच्छामः।
त्वं गच्छसि। युवां गच्छथः। यूयं गच्छथ।

सः गच्छति । तौ गच्छतः । ते गच्छान्तिं ।
पुरुषः गच्छति । मनुष्यौ गच्छतः । देवाः गच्छंति ।
अहं वदामि । आवां न वदावः । वयं कथं वदामः ?
त्वं वदसि किं ? युवां किं वदथः ? यूयं शब्दान् वदथ ।
जनः मुखेन वदति । अश्वौ न वदतः । मयूराः वदन्ति ।

अब कुछ क्रियाएं दी जाती हैं, उनके रूप पूर्ववत् कीजिये—

धातु	अर्थ	रूप
१ गम् (गच्छ्)	जाना	गच्छति
२ भक्ष्	खाना	भक्षयति
३ दृश् (पश्य)	देखना	पश्यति
४ नी (नय)	लेजाना	नयति
५ पठ्	पढना	पठति
६ स्था (तिष्ठ्)	ठहरना	तिष्ठति
७ धाव्	दौडना	धावति
८ पा (पिब्)	पीना	पिबति
९ वद्	बोलना	वदति
१० क्रीड्	खेलना	क्रीडति

इन धातुओंके वर्तमानकालके रूप बनानेके प्रत्यय इस पाठमें दिये हैं । मूल धातुके जो भिन्न रूप बनते हैं वे कंसमें ( ) दिये हैं ।

वाक्य ।

अहं पुस्तकं पठामि=मैं पुस्तक पढता हूं ।

वाक्य ।

आवां पुस्तकं न पठावः=हम (दो) पुस्तक नहीं पढते हैं ।

वयं ग्रंथं पठामः=हम (सब) ग्रंथ पढते हैं ।

रामः लेखं नैव पठति=राम लेख नहीं पढता ।

बालकौ पुस्तकं किं न पठतः ?=(दो) बालक पुस्तक क्यों नहीं पढते ?

बालकाः ग्रंथं इदानीं पठन्ति=(बहुत) बालक ग्रंथ अब पढते हैं ।

अहं अत्र क्रीडामि=मैं यहां खेलता हूं ।

आवां अत्र न क्रीडावः=हम (दोनों) यहां नहीं खेलते ।

वयं अत्र एव क्रीडामः=हम (सब) यहां ही खेलते हैं ।

त्वं कुत्र क्रीडसि ?=तू कहां खेलता है ?

युवां स्वगृहे क्रीडथः=तुम (दोनों) अपने घरमें खेलते हैं ।

यूयं मम गृहे न क्रीडथ=तुम (सब) मेरे घरमें नहीं खेलते हैं ।

सः पुस्तकं कुत्र नयति ?=वह पुस्तक कहां ले जाता है ।

तौ वस्त्रं अत्र आनयतः=वे (दोनों) कपडा यहां लाते हैं ।

ते अन्नं न नयन्ति=वे (सब) अन्न नहीं ले जाते ।

मनुष्यः मार्गे तिष्ठति=मनुष्य मार्गमें ठहरता है ।

नरौ मंदिरे तिष्ठतः=(दो) मनुष्य मंदिरमें ठहरते हैं ।

जनाः वने न तिष्ठन्ति=(सब) मनुष्य वनमें नहीं ठहरते ।

एकः जनः जलं पिबति=एक मनुष्य पानी पीता है ।

द्वौ पुरुषौ दुग्धं पिबतः=दो पुरुष दूध पीते हैं।

सर्वे मानवाः रसं न पिबन्ति=सब मनुष्य रस नहीं पीते हैं।

यथा त्वं वदसि तथा तौ न वदतः=जैसा तू बोलता है वैसे वे (दो) नहीं बोलते।

यथा तौ धावतः तथा अहं न धावामि=जैसा वे (दो) दौडते हैं वैसा मैं नहीं दौडता हूं।

तौ किं भक्षयतः=वे (दो) क्या खाते हैं ?

युवां कुत्र क्रीडथः ?=तुम (दो) कहां खेलते हैं ?

आवां अत्र पठावः=हम (दो) यहां पढते हैं।

वयं रूपं पश्यामः=हम (सब) रूप देखते हैं।

पाठक इसप्रकार नामोंके वचन तथा क्रियाओंके वचन इनका ठीक प्रकार संबंध देखें और समझें। ताकि इसमें कोई गलती न होने पावे। इतने उदाहरण दिये हैं, इनको विचारपूर्वक देखनेसे सब बातका पता लग जायगा।

पाठ ७

१ राजा दशरथः उवाच—हे कैकेयि ! रामात् अन्यः मे त्वत्तः प्रियतरः कः अपि नास्ति ।=राजा दशरथ बोला—हे कैकेयि ! रामसे भिन्न मेरा तेरेसे अधिक प्रिय कोईभी नहीं है।

२ तेन राघवेण एव शपे=उस रामचंद्रकीही शपथ लेता हूं।

३ अतः इदानीं तव मनसेप्सितं ब्रूहि तत् अधुना करिष्यामि=तेरे मनका (ईप्सितं) इष्ट कह, वह अब करूंगा ।

४ तेन हृष्टा कैकेयी महाघोरं स्वाभिप्रायं व्याजहार=उससे संतुष्ट हुई कैकेयी बडा क्रूर अपना अभिप्राय बोलने लगी ।

५ अत्र अयं सत्यसंधः सत्यवाक् राजा दशरथः मे वरं ददाति=यहां यह सत्यप्रतिज्ञ सत्यभाषणी राजा दशरथ मुझे वर देता है ।

६ अनेन एव रामस्य अभिषेकसमारंभेण मे भरतः राज्यं अभिषिच्यताम्=इसी रामके अभिषेक समारंभसे मेरा भरत राज्यमें अभिषिक्त कीजिये ।

७ रामः च चीराजिनधरः चतुर्दशवर्षाणि दंडकारण्यं आश्रितः तापसो भवतु=और राम वल्कल और चर्म धारण कर चौदह वर्ष दंडक अरण्यका आश्रय कर तापसी होवे ।

८ एष मे परमः कामः । त्वया दत्तं एव वरं वृणे । अद्य एव रामं वने प्रयान्तं पश्यामि=यह मेरी परम इच्छा है । तूने दिया हुआ ही वर (वृणे) स्वीकार करती हूं । आज ही राम वनमें चला हुआ देखूंगी ।

९ इति एवं दारुणं वचः श्रुत्वा महाराजः दशरथः सद्यः निःसंज्ञः इव बभूव=इस प्रकार यह भयानक भाषण सुनकर महाराज दशरथ (सद्यः) तत्क्षण (निःसंज्ञः) मूर्छित सा होगया ।

१० पुनः संज्ञां प्राप्य, असंवृतायां एव भूम्यां आसीनः,

दीर्घं उष्णं च निश्वस्य, भूयः अपि मोहं आपेदिवान्=पुनः (संज्ञां) चेतना प्राप्तकर, (अ-संवृतायां) न आच्छादित भूमीपर ही बैठा हुआ, दीर्घ और उष्ण श्वास छोडकर, वारंवार ही मोह को प्राप्त हुआ ।

११ चिरेण तु संज्ञां प्रतिलभ्य क्रुद्धः राजा कैकेयीं इदं अब्रवीत्=देरसे फिर चेतना प्राप्तकर क्रुद्ध राजा कैकेयीसे यह बोला ।

१२ पापे ! किं ते रामेण अपकृतं ?=हे पापी स्त्री ! क्या तेरा रामने अपराध किया ?

१३ सदा तव विषये जननीतुल्यां वृत्तिं रामः वहति= हमेशा तेरे विषयमें माताके समान वृत्ति राम धारण करता है ।

१४ तीक्ष्णविषा सर्पिणी इव मया त्वं आत्मविनाशाय एव स्वभवनं निवेशिता=तीखे विषवाली सांपिनीके समान मैंने तुमको अपने विनाशके लिये ही अपने घरमें प्रविष्ट कराई ।

१५ रामं अपश्यतः तु मम चेतनं नष्टं भवति=रामको न देखनेपर तो मेरी चेतना ही नष्ट होती है ।

१६ तद् अलं । त्यज्यतां एष निश्चयः । अपि एषः अहं ते चरणौ मूर्ध्ना स्पृशामि, प्रसीद ।=तो बस । छोडा जाय यह निश्चय । अब यह मैं तेरे चरणोंको सिरसे स्पर्श करता हूं, प्रसन्न हो ।

१७ अथ कैकेयी रौद्राद् रौद्रं प्रत्युवाच ।=अब कैकेयी भयानकसे भयानक बोलने लगी ।

१८ हे राजन् ! यदि वरौ दत्वा पुनः अनुतप्यसे तर्हि पृथिव्यां धार्मिकत्वं कथं कथयिष्यसि ?=हे राजा ! यदि (दो)

वर देकर फिर पश्चात्ताप करता है, तो पृथ्वीपर धार्मिक कैसा कहलायगा ?

१९ **अहं तव अग्रतः अद्य एव मरिष्यामि विषं पीत्वा यदि रामः अभिषिच्यते** ।=मैं तेरे सामने आज ही मरूंगी विष पीकर यदि रामका अभिषेक होगा ।

२० **ऋते रामविवासनात् अहं न तुष्येयम्**=राम के वनवास के (ऋते) विना मैं नहीं संतुष्ट होऊंगी ।

समास ।

१ **रामविवासनं=रामस्य विवासनं** (रामका वनवास)

२ **स्वाभिप्रायः=स्वस्य अभिप्रायः** (अपना अभिप्राय)

३ **सत्यसंधः=सत्या संधा प्रतिज्ञा यस्य** (सत्य है प्रतिज्ञा जिसकी ।)

४ **सत्यवाक्=सत्या वाक् वाणी यस्य** (सत्य है वचन जिसका।)

५ **अभिषेकसमारंभः=अभिषेकस्य समारंभः** (अभिषेकका समारंभ)

६ **चीराजिनधरः=चीरं च अजिनं च चीराजिने । चीराजिने धरति इति चीराजिनधरः** (वल्कल और चर्म धारण करनेवाला ।)

पाठक इन समासोंका अच्छा अभ्यास करें । तथा इस पाठके वाक्योंका भी उत्तम अध्ययन करें । और यदि हो सके तो इन वाक्यों के संधि बनाकर सरल संस्कृत वाक्य बनाकर लिखकर रखें ।

पाठ ८

तथा तान्दुःखितान्दृष्ट्वा पाण्डवान्धृतराष्ट्रजः ।
क्लिश्यमानां च पाञ्चालीं विकर्ण इदमब्रवीत् ॥ ११॥

म. भा. सभा. ६८

(तथा) एवं प्रकारेण तान् पांडवान् दुःखितान् दृष्ट्वा (धृतराष्ट्रजः) धृतराष्ट्रात् जातः पुत्रः विकर्णः (क्लिश्यमानां) क्लेशैः पीडितां दुःखितां (पांचालीं) द्रौपदीं च दृष्ट्वा इदं (अब्रवीत्) अवदत् ।

याज्ञसेन्या यदुक्तं तद्वाक्यं विब्रूत पार्थिवाः ।
अविवेकेन वाक्यस्य नरकः सद्य एव नः ॥ १२ ॥

हे (पार्थिवाः) नृपाः ! (याज्ञसेन्या) द्रौपद्या यत् (उक्तं) कथितं (वाक्यं) वचनं तत् (विब्रूत) विशेषेण ब्रूत कथयत । तस्य द्रौपद्या प्रश्नस्य उत्तरं दातव्यं इति अर्थः । वाक्यस्य (अविवेकेन) अविचारेण (नः) अस्माकं सर्वेषां (सद्यः) तत्क्षणं एव नरकः भविष्यति ।

भीष्मश्च धृतराष्ट्रश्च कुरुवृद्धतमावुभौ ।
समेत्य नाहतुः किंचिद्विदुरश्च महामतिः ॥ १३ ॥

भीष्मः च धृतराष्ट्रः च (उभौ) द्वौ अपि (कुरुवृद्धतमौ) सर्वेषु कुरुषु अत्यंतवृद्धौ । तौ द्वौ अपि (समेत्य) संगत्य किंचित् न (आहतुः) न उक्तवन्तौ । (महामतिः) महाबुद्धिमान् विदुरः च किंचित् अपि न आह ।

भारद्वाजश्च सर्वेषामाचार्यः कृप एव च ।
कुत एतावपि प्रश्नं नाहतुर्द्विजसत्तमौ ॥ १४ ॥

(भारद्वाजः) द्रोणः सर्वेषां कुरूणां आचार्यः (कृपः) कृपनामकः एव च सर्वेषां कुरूणां आचार्यः । एतौ द्वौ अपि आचार्यौ (द्विजसत्तमौ) द्विजश्रेष्ठौ (कुतः) किमर्थं प्रश्नं न आहतुः ?

ये त्वन्ये पृथिवीपालाः समेताः सर्वतो दिशम् ।
कामक्रोधौ समुत्सृज्य ते ब्रुवन्तु यथामति ॥ १५ ॥

ये तु अन्ये (पृथिवीपालाः) भूपाः सर्वतः दिशं (समेताः) संगताः प्राप्ताः ते कामक्रोधौ (समुत्सृज्य) त्यक्त्वा परित्यज्य यथामति (ब्रुवन्तु) कथयन्तु ।

यदिदं द्रौपदी वाक्यमुक्तवत्यसकृच्छुभा ।
विमृश्य कस्य कः पक्षः पार्थिवा वदतोत्तरम् ॥ १६ ॥

शुभा द्रौपदी (असकृत्) अनेकवारं यद् इदं वाक्यं उक्तवती । हे (पार्थिवाः) नृपाः ! (विमृश्य) विचार्य कस्य कः पक्षः इति उत्तरं (वदत) कथयत ।

इस पाठमें संस्कृत श्लोकोंका अर्थ सुगम संस्कृतमें ही दिया है । पाठक ध्यानपूर्वक इसको वारंवार पढेंगे तो उनके समझमें सब अर्थ आ जायगा । श्लोकके कठिन शब्द ( ) ऐसे कंसमें रखे हैं और आगे उनका अर्थ दिया है । यदि यह अर्थ विना आयास पाठकोंके मनमें आगया, तो समझिये कि अच्छी प्रगति हो चुकी है । अब यहां श्लोकोंके समास देते हैं—

समास ।

१ धृतराष्ट्रजः=धृतराष्ट्रात् जातः ।(धृतराष्ट्रसे उत्पन्न हुआ)

२ कुरुवृद्धतमौ=कुरुषु वृद्धः कुरुवृद्धः । अत्यंतं कुरुवृद्धः कुरुवृद्धतमः तौ कुरुवृद्धतमौ । (कौरवोंमें अतिवृद्ध)

३ महामतिः=महती विशाला मतिः बुद्धिः यस्य । (विशाल बुद्धिवाला)

४ द्विजसत्तमः=द्विजेषु ब्राह्मणक्षत्रियवैश्येषु सत्तमः श्रेष्ठः द्विजसत्तमः । (द्विजोंमें श्रेष्ठ)

५ पृथिवीपालः=पृथिव्याः पालः पालकः । (पृथिवीका पालनकर्ता)

६ कामक्रोधौ=कामः च क्रोधः च कामक्रोधौ (काम और क्रोध)

७ असकृत्=न सकृत् असकृत् (नहीं एकवार=अनेकवार)

पाठक इन समासोंका ठीक अध्ययन करें । इस अध्ययनसे समासोंका उत्तम ज्ञान हो सकता है ।

संधि ।

१ विकर्ण इदं=विकर्णः इदं ।

२ यदुक्तं=यत् उक्तं ।

३ तद्वाक्यं=तत् वाक्यं ।

४ सद्य एव=सद्यः एव ।

५ भीष्मश्च=भीष्मः च ।

६ कूप एव=कूपः एव ।
७ एतावपि=एतौ अपि ।
८ नाहतुर्द्विज०=न आहतुः द्विज० ।
९ त्वन्ये=तु अन्ये ।
१० सर्वतो दिशं=सर्वतः दिशं ।
११ उक्तवत्यसकृच्छुभा=उक्तवती अ-सकृत् शुभा ।
पाठक इन संधियोंको ध्यानसे देखें ।

पाठ ९.

पूर्व दो पाठोंमें जो संस्कृत वाक्य दिये हैं उनके संधि बना कर सरल संस्कृत इस पाठमें दिया जाता है—

राजा दशरथ उवाच—हे कैकेयि! रामादन्यः मे त्वत्तः प्रियतरः कोऽपि नास्ति । तेन राघवेणैव शपे । अत इदानीं मनसेप्सितं ब्रूहि, तदधुना करिष्यामि । तेन हृष्टा कैकेयी महाघोरं स्वाभिप्रायं व्याजहार ।

अत्रायं सत्यसंधः सत्यवाग्राजा दशरथो मे वरं ददाति । अनेनैव रामस्याभिषेकसमारंभेण मे भरतो राज्येऽभिषिच्यताम् । रामश्च चीराजिनधरश्चतुर्दशवर्षाणि दंडकारण्यमाश्रितस्तापसो भवतु ।

एष मे परमः कामः । त्वया दत्तमेव वरं वृणे । अद्यैव रामं वने प्रयान्तं पश्यामि ।

इत्येवं दारुणं वचः श्रुत्वा महाराजो दशरथः सद्यो निःसंज्ञ इव बभूव । पुनः संज्ञां प्राप्य असंवृतायामेव भूम्यामासीनो, दीर्घमुष्णं च निश्वस्य भूयोऽपि मोहमापेदिवान् ।

चिरेण तु संज्ञां प्रतिलभ्य क्रुद्धो राजा कैकेयीमिदमब्रवीत् ।

पापे ! किं ते रामेणापकृतं ? सदा तव विषये जननीतुल्यां वृत्तिं रामो वहति । तीक्ष्णविषा सर्पिणीव मया त्वमात्मविनाशायैव स्वभवनं निवेशिता । राममपश्यतस्तु मम चेतनं नष्टं भवति । तदलं, त्यजतामेष निश्चयः । अप्येषोऽहं ते चरणौ मूर्ध्ना स्पृशामि, प्रसीद ।

अथ कैकेयी रौद्राद्रौद्रं प्रत्युवाच । –हे राजन् ! यदि वरौ दत्वा पुनरनुतप्यसे तर्हि पृथिव्यां धार्मिकत्वं कथं कथयिष्यसि ? अहं तवाग्रतोऽद्यैव मरिष्यामि विषं पीत्वा यदि रामोऽभिषिच्यते । ऋते रामविवासनादहं न तुष्येयम् ।

पाठ सप्तमके संस्कृत वाक्योंका यह संधियुक्त संस्कृत है । यदि इसमें कोई कठिनता प्रतीत हो गई तो सप्तम पाठ देखनेसे निवृत्त हो सकती है ।

अब पूर्व पाठमें दिये श्लोकोंका सरल संस्कृत यह है देखिये—

तथा तान्पांडवान्दुःखितान्दृष्ट्वा धृतराष्ट्रजो विकर्णः क्लिश्यमानां पांचालीं च दृष्ट्वेदमब्रवीत् ।

हे पार्थिवाः ! याज्ञसेन्या यद्वाक्यमुक्तं तद्विब्रूत । वाक्यस्य अविवेकेन सद्य एव नरकः ।

भीष्मश्च धृतराष्ट्रश्चोभौ कुरुवृद्धतमौ समेत्य किंचिन्नाहतुः महामतिः विदुरश्च किंचिन् नाह ?

भारद्वाजः सर्वेषामाचार्यः कृप एव चैतावपि द्विजसत्तमौ कृतं प्रश्नं नाहतुः ?

ये त्वन्ये पृथिवीपालाः सर्वतो दिशं समेतास्ते कामक्रोधौ समुत्सृज्य यथामति ब्रुवन्तु ।

शुभा द्रौपद्यसकृद्यदिदं वाक्यमुक्तवती । हे पार्थिवाः ! विमृश्य कस्य कः पक्ष इत्युत्तरं वदत ।

संधियुक्त वाक्य ये हैं । इनके मूल श्लोक पूर्व पाठमें है । संदेह-के स्थानपर वहां ही पाठक देखें और संदेह निवृत्त करें ।

सूचना—इन वाक्योंसे पूर्व श्लोकोंकी अपेक्षा किसी स्थानपर कुछ शब्द अधिक भी रखे हैं । अर्थका ज्ञान सुगमतासे होने के लिये ऐसा करना आवश्यक हुआ है ।

संधि ।

१ दशरथ उवाच=दशरथः उवाच ।

२ रामादन्यः=रामात् अन्यः ।

३ कोऽपि=कः अपि ।

४ राघवेणैव=राघवेण एव ।

५ तदधुना=तत् अधुना ।

६ स्वाभिप्रायं=स्व अभिप्रायं ।

७ सत्यवाग्राजा=सत्यवाक् राजा ।

८ अद्यैव=अद्य एव ।

९ इत्येवं=इति एवं ।

१० क्रुद्धो राजा=क्रुद्धः राजा ।

११ सर्पिणीव=सर्पिणी इव ।

इन संधियोंका अभ्यास पाठक करें और अन्य संधि खोलनेका भी अभ्यास करें ।

पाठ १०.

इस पाठमें निम्नलिखित अकारान्त पुल्लिंग शब्द याद कीजिये—

अर्थः=पैसा, धन
वानरः=बंदर
छात्रः=शिष्य
दण्डः=सोटी
मृगः=हिरन
स्तेनः=चोर
द्विरेफः=भ्रमर
व्याधः=शिकारी
लेखः=लेख
करः=हाथ
प्रवाहः=प्रवाह

उद्यमः=उद्योग
कुक्कुरः=कुत्ता
समाजः=समाज
दैत्यः=राक्षस
पाठः=पाठ
ब्राह्मणः=ब्राह्मण
शक्रः=इंद्र
पान्थः=मुसाफिर
अलंकारः=जेवर
स्नेहः=मित्रता
विचारः=विचार

वाक्य ।

सः अर्थं वांच्छति=वह धनकी इच्छा करता है ।

वानरौ वृक्षस्य उपरि भवतः=(दो) वानर वृक्षके ऊपर होते हैं ।

छात्राः गुरोः समीपं पठन्ति=(सब) शिष्य गुरुके समीप पढते हैं ।

दण्डं धरति इति दंडधरः=दंड धरनेवाला दंडधर (होता है) ।

तौ द्वौ दंडौ अत्र आनय=वे दो सोटियां यहां ला ।

व्याधः दंडेन एव मृगान् ताडयति=शिकारी दंडेसे ही (सब) मृगोंको ताडन करता है ।

स्तेनाय दंडं देहि=चोरको दंड दो ।

सः हस्ताभ्यां भारं नयति=वह (दो) हाथोंसे बोझ ले जाता है ।

व्याधः बाणैः मृगं विध्यति=शिकारी बाणोंसे हिरनको विंधता है ।

द्विरेफः शब्दं करोति=भ्रमर शब्द करता है ।

लेखकः लेखं न लिखति=लेखक लेख लिखता नहीं ।

यः न लिखति स लेखकः भवितुं न योग्यः=जो नहीं लिखता वह लेखक होने योग्य नहीं ।

अहं कराभ्यां मुखं आच्छादयामि=मैं (दो) हाथोंसे मुख आच्छादित करता हूं ।

इदानीं अत्र जलस्य महान् प्रवाहः अस्ति=अब यहां जलका बडा प्रवाह है ।

उद्यमेन हि कार्याणि सिद्ध्यन्ति न मनोरथैः=उद्योगसेही कार्य सिद्ध होते हैं, मनोरथसे नहीं।

व्याधः कुक्कुरैः व्याघ्रं अन्वेषति=शिकारी कुत्तों से शेर को ढूंढता है।

यदा मनुष्याणां महान् समाजः भवति तदा तस्मिन् बहु बलं भवति=जब मनुष्योंका बडा समाज होता है तब उसमें बडा बल होता है।

दैत्यः मनुष्यं भक्षयति=राक्षस मनुष्यको खाता है।

अद्य त्वं कं पाठं पठसि ?=आज तू किस पाठको पढता है ?

प्राज्ञः ब्राह्मणः वेदं पठति=ज्ञानी ब्राह्मण वेद पढता है।

स्वर्गे शक्रः राज्यं करोति=स्वर्गमें इंद्र राज्य करता है।

पान्थाय जलं देहि=मुसाफिरके लिये जल दो।

मूर्खः अलंकारैः देहं भूषयति=मूढ मनुष्य जेवरोंसे देहको सजाता है।

स्नेहेन सुखं लभते=मित्रतासे सुख प्राप्त होता है।

वाचनपाठः।

यदा त्वं जलं पिबसि तदा एव अहं दुग्धं पिबामि। यदा त्वं तत्र आगमिष्यसि तदा अहं एतत्पुस्तकं पठिष्यामि। अहं रात्रौ बहिः न गमिष्यामि। अहं इदानीमेव गृहं गत्वा आम्रं भक्षयामि। दुग्धेन सह आम्रस्य भक्षणं अतीव मधुरं भवति। आकाशात् द्विरेफः पतति। सः पुरुषः किमर्थं पुस्तकं आनयति ? अहं यदा तत्र

गतः तदा सः तत्र नासीत्। अहं वनं गत्वा पुष्पमालां शीघ्रं कृत्वा अत्र आनयिष्यामि। त्वं उद्यानपुष्पाणां मालां इच्छसि वा वनपुष्पाणां मालां वांछसि ? यत्र यज्ञदत्तः गच्छति तत्र देवदत्तः न गच्छति। परंतु यज्ञदत्तदेवदत्तौ सदा अत्र भवतः। त्वं मम वस्त्रं गृहीत्वा शीघ्रं अत्र आगच्छ, मम रक्तं वस्त्रं एव अत्र आनय न श्वेतं वस्त्रं।

पाठक इसप्रकार अनेकानेक वाक्य बनाकर अपना अभ्यास बढावें। वाक्य बनानेके समय एकवचन द्विवचन और बहुवचनका ख्याल अवश्य करें नहीं तो वाक्य अशुद्ध बनेंगे। ऊपर जो वाक्य दिये हैं उनका मनन करनेसे यह अभ्यास सुगमतासे हो जायगा।

पाठ ११

इस पाठमें निम्नलिखित धातु कंठ करके उसके रूप पूर्ववत् बनाइये—

धातु	अर्थ	रूप
१ आगच्छ्	आना	आगच्छति
२ आनी (आनय्)	लाना	आनयति
३ भू (भव्)	होना	भवति
४ पत्	गिरना	पतति
५ चल्	चलना	चलति
६ चर्	घूमना	चरति

७ लिख्	लिखना	लिखति
८ स्था (तिष्ठ्)	ठहरना	तिष्ठति
९ उपविश्	बैठना	उपविशति
१० पच्	पकाना	पचति
११ वस्	रहना	वसति
१२ वह्	उठाना	वहति
१३ वप्	बोना	वपति
१४ रट्	बोलना	रटति
१५ रण्	शब्द करना	रणति
१६ भण्	बोलना	भणति

पाठक इन धातुओंके रूप पूर्व बतायी हुई रीतिके अनुसार करके वाक्य करें—

वाक्य ।

पुरुषः आगच्छति=पुरुष आता है ।
मनुष्यौ आनयतः=(दो) मनुष्य लाते हैं ।
बालकाः तत्र भवन्ति=बालक वहां होते हैं ।
हे मनुष्य ! त्वं पतसि=हे मनुष्य ! तू गिरता है ।
हे वीरौ ! युवां चलथः=हे वीरो ! तुम (दो) चलते हैं ।
हे मानवाः ! यूयं चरथ=हे मानवो ! तुम (सब) घूमते हैं ।
अत्र अहं लेखं लिखामि=यहां मैं लेख लिखता हूं ।
आवां अत्र तिष्ठावः=हम (दो) यहां ठहरते हैं ।
वयं तत्र उपविशामः=हम (सब) वहां बैठते हैं ।

सूदः अन्नं पचति=रसोइया अन्न पकाता है ।

परिचारकौ तत्र वसतः=(दो) सेवक वहां रहते हैं ।

अश्वाः रथं वहन्ति=घोडे रथको चलाते हैं ।

कृषीवलः बीजं वपति=किसान बीज बोता है ।

बालकौ तत्र किमपि रटतः=(दो) बालक वहां कुछभी बोलते हैं ।

घंटाः रणन्ति=घण्टाएं शब्द करती हैं ।

त्वं किं इदानीं भणसि ?=तू क्या अब बोलता है ।

वाक्य ।

अहं आगच्छामि । त्वं आगच्छसि । स आगच्छति । आवां आगच्छावः । युवां आगच्छथः । तौ आगच्छतः । वयं आगच्छामः । यूयं आगच्छथ । ते आगच्छन्ति ।

अहं फलं आनयामि । आवां जलं आनयावः । वयं धान्यं आनयामः । त्वं पात्रं आनयसि । युवां वस्त्रं आनयथः । यूयं पुस्तकं आनयथ । सः अश्वं आनयति । तौ अश्वं आनयतः । ते अश्वं आनयन्ति ।

वृक्षः भवति । वृक्षौ भवत । वृक्षाः भवन्ति । त्वं भवसि । युवां भवथः । यूयं भवथ । अहं भवामि । आवां भवावः । वयं भवामः ।

बालकः पतति । बालकौ पततः । बालकाः पतन्ति । त्वं

पतासि । युवां पतथः । यूयं पतथ । अहं पतामि । आवां पतावः । वयं पतामः ।

अहं ग्रामं चलामि । आवां नगरं चलावः । वयं देशान्तरं चलामः । त्वं कदा चलसि ? युवां कुत्र चलथः ? यूयं किं न चलथ ? सः इदानीं न चलति । तौ इदानीं न चलतः । ते इदानीं एव चलन्ति ।

अश्वः वने चरति । अश्वौ वने चरतः । अश्वाः वने चरन्ति । त्वं कुत्र चरसि । युवां कुत्र चरथः । यूयं कुत्र चरथ । सः न चरति । तौ तत्र चरतः । ते न चरन्ति ।

गंगाधरः लिखति । विश्वामित्रभरद्वाजौ लिखतः । छात्राः लिखन्ति । त्वं किं न लिखसि ? युवां लिखथः किं ? यूयं किं लिखथ ? अहं अत्र लिखामि । आवां अत्र लिखामः । वयं अत्र न लिखामः ।

धातुओंके रूप बनानेका अभ्यास इस पद्धतिसे पाठक करें । कर्ता का वचन और क्रियाका वचन एक होना चाहिये । थोडेही शब्दोंसे प्रत्येक धातुके रूप जोडकर इस प्रकार अनंत वाक्य हो सकते हैं । यदि पाठक इस रीति से प्रतिदिन अभ्यास करेंगे तो उनको संस्कृत वाक्य बनाना सुगम हो जायगा ।

पाठ १२

इस पाठमें आप निम्नलिखित शब्द स्मरण कीजिये——

अकारान्त पुल्लिंग शब्द ।

कूपः=कूआ
दुर्जनः=दुष्ट मनुष्य
विनयः=नम्रता
शुकः=तोता
मार्जनलेपः=साबून
देहः=शरीर
ओदनः=पके चावल
प्रश्नः=प्रश्न, सवाल
जडः=जड, मूढ
नागः=सांप, हाथी
यवः=जौ
लोभः=लोभ
ओष्ठः=होंठ
मयूरः=मोर
सुजनः=सज्जन
कामः=काम, इच्छा
पेटकः=पेटी, संदूक
प्रकाशः=प्रकाश, उजाला
काचः=शीशा.
जनकः=पिता

इदानीं तव कूपस्य जलं पिबामि=अब तेरे कुवेका जल पीता हूं ।

दुर्जनं दूरतः परित्यज=दुष्ट मनुष्यका दूर परित्याग कर ।

विद्वान् विनयेन शोभते=विद्वान नम्रतासे शोभता है ।

शुकः वृक्षस्य उपरि वसति=तोता वृक्षके ऊपर वसता है ।

मार्जनलेपेन जलेन च शरीरं निर्मलं कुरु=साबुनसे तथा जलसे शरीर निर्मल स्वच्छ कर ।

अश्वस्य देहः मनुष्यस्य शरीरात् बलिष्ठतरः अस्ति=घोडेका शरीर मनुष्यके देहसे अधिक बलिष्ठ है ।

त्वं कथं ओदनं पचसि=तू कैसे चावल पकाता है ?

सः इदानीं प्रश्नं पृच्छति=वह अब प्रश्न पूछता है ।

जडः ज्ञानेन हीनः भवति=मूढ ज्ञानसे हीन होता है ।

नागः विषयुक्तः भवति=सांप विषयुक्त होता है ।

तव जनकः किं लिखति ?=तेरा पिता क्या लिखता है ?

काचः त्वया दृष्टः किं ?=शीशा तुमने देखा है क्या ?

इदानीं शुभ्रः सूर्यस्य प्रकाशः अस्ति=अब सूर्यका शुभ्र प्रकाश है ।

तव पेटके मम पुस्तकं अस्ति=तेरी संदूकमें मेरा पुस्तक है ।

यथा कामः तथा एव लोभः=जैसा काम वैसा ही लोभ है ।

सुजनं नमस्करोमि=सुजनको नमस्कार करता हूं ।

मयूरः अतीव शोभनः भवति=मोर अति सुंदर होता है ।

ओष्ठः कथं रक्तवर्णः न भवति=होंठ कैसे लालवर्णवाला नहीं होता है ?

वाक्य ।

त्वं मुद्गं किं न पचसि? मुद्गमिश्रितः ओदनः मधुरः भवति । मुद्गानां अन्नं मधुरं भवति । तस्य हिमपर्वतस्य शिखरं अतीव रमणीयं अस्ति । एकस्य बालकस्य पुस्तकं अन्यः नयति । तदा द्वौ अपि बालकौ युद्धं कुरुतः । यस्य बालकस्य मुखं मलिनं भवति सः मूढः भवति ।

स बालकः इदानीं किं भक्षयति ? सः इदानीं आम्रं भक्षयति दुग्धं च पिबति । आम्रस्य भक्षणानंतरं जलं न पिब । तस्मै मार्गं देहि । सः अंधः बधिरः च अस्ति ।

आचार्यः धर्मस्य वचनं उपदिशति । त्वया तत् किं न श्रुतम् ? उपदेशकः धर्मवचनस्य अमृतं ददाति । तत् यथा इच्छसि तथा पिब ।

नृपतिः चोरं ताडयति । राजा यदा नगरात् बहिः गच्छति तदा एव चोरः अत्र आगच्छति ।

त्वं अत्र कुमारं किमर्थं ताडयसि ? किं तेन कृतं ? सः शोभनः छात्रः अस्ति । तं न ताडय । सः इदानीं स्वपाठं करोति ।

स्वादु दुग्धं मिष्टं भवति । तथा फलानां रसः अपि मिष्टः अस्ति । अस्य कूपस्य जलं मधुरं नास्ति, तत् अतीव क्षारं अस्ति ? अस्य कारणं किम् अस्ति ?

विष्णुमित्रः कदा स्नानं करोति ? त्वं कदा भोजनं करोषि ? तव पुत्रः कदा पठति ? त्वं कुत्र वससि ? युवां कुत्र वसतः ? अहं प्रातः वनं गतः इदानीं एव गृहं आगतः ।

पाठक इस प्रकार छोटे छोटे वाक्य बनाकर बोलनेका यत्न करें । जो जो शब्द इस समयतक पाठकोंको कंठ हो चुके हैं, उनका उपयोग करके अनेकानेक वाक्य पाठक बोल सकते हैं ।

इस प्रकार छोटे छोटे वाक्य बनानेका अभ्यास समय समयपर पाठक करेंगे तो उनको सैंकडों वाक्य बनानेका अवसर मिलेगा । और उनको विश्वास भी हो जायगा कि अपनी प्रगति संस्कृतमें इतनी हो गई है ।

पाठ १३

१ श्रुत्वा तत् कैकेयीवचनं राजा दशरथः निःश्वस्य छिन्नः तरुः इव अपतत् ।=सुन कर वह कैकेयीका भाषण राजा दशरथ श्वास छोडकर काटे हुए वृक्षके समान गिर पडा ।

२ दीनया वाचा च कैकेयीं अपृच्छत्=दीन वाणीसे कैकेयीसे पूछने लगा ।

३ केन त्वं एवं उपदिष्टा ?=किसने तुझे इस प्रकार उपदेश किया ?

४ नानादिग्भ्यः समागता राजानः किं मां वक्ष्यन्ति=नाना दिशाओंसे आये राजालोग क्या मुझे कहेंगे ।

५ रामं वनं गच्छन्तं, सीतां च रुदतीं, दृष्ट्वा चिरं जीवितुं न आशंसे=राम वनको जाते, और सीताको रोते, देखकर देरतक जीनेकी आशा नहीं है ।

६ हे कैकेयि ! सर्वान् अस्मान् नरके प्रक्षिप्य सुखिता भव= हे कैकेयी ! सब हमको नरकमें फेंककर सुखी हो जाओ ।

७ मयि मृते, रामे वनं गते च, त्वं विधवा भूत्वा एव राज्यं करिष्यसि=मेरे मरनेपर और रामके वनको जानेपर, तू विधवा होकर ही राज्य करेगी ।

८ तथा विलपतः दशरथस्य, सूर्यः अस्तं गतः । रजनी च अभ्यावर्तत । प्रभातकालः अपि जातः=उस प्रकार विलाप करते हुए दशरथके, सूर्य अस्तको गया । रात्री भी होगई । प्रातःकाल भी हुआ ।

९ प्रभाते एव आशु वसिष्ठः संभारान् उपगृह्य राजमंदिरं प्रविवेश ।=सवेरेही शीघ्र वसिष्ठ सामुग्री लेकर राजमंदिरमें प्रविष्ट हुआ।

१० सचिवं सुमंत्रं आहूय प्रोवाच=मंत्री सुमंत्रको बुलाकर बोला।

११ मां आगतं नृपतेः क्षिप्रं आचक्ष्व=मैं आया हूं, यह राजाको शीघ्र कह दो।

१२ तथा त्वरस्व, यथा पुष्यनक्षत्रे रामः राज्यं अवाप्नुयात्= वैसी त्वरा कर कि जिससे पुष्यनक्षत्रमें राम राज्यको प्राप्त होवे।

१३ एवं श्रुत्वा सः अपि प्रविवेश अन्तःपुरम्=यह सुनकर वह भी प्रविष्ट हुआ अंतःपुरमें।

१३ राज्ञः अवस्थां अज्ञात्वा एव तं अभिष्टोतुं प्रचक्रमे= राजाकी अवस्था न जानकर ही उसकी स्तुति करना प्रारंभ किया।

१४ धार्मिकः राजा दशरथः रामं प्रति भग्नहृदयः शोकरक्तेक्षणः तं उवाच=धार्मिक राजा दशरथ रामके प्रति छिन्नहृदय होकर शोकसे लाल (ईक्षण) नेत्र होकर उसे बोला।

१५ एतैः वाक्यैः खलु त्वं मम मर्माणि कृंतसि=इन वाक्यों से तो तू मेरे मर्महीं काट रहा है!

१६ सुमन्त्रः अस्य वाक्यस्य अर्थं न अन्ववुध्यत=सुमन्त्र इस वाक्य का अर्थ नहीं समझा।

१७ यदा दशरथः दैन्यात् न शशाक वक्तुं तदा मंत्रज्ञा कैकेयी सुमंत्रं प्रत्युवाच=जब दशरथ दीनताके कारण नहीं समर्थ हुआ बोलनेके लिये, तब विचार का भाव समझनेवाली कैकेयी सुमंत्रसे बोली।

१८ हे सुमंत्र ! राजा रजनां प्रजागरपरिश्रान्तः निद्रा गतः तत् त्वरितं रामं अत्र आनय ।=हे सुमंत्र ! राजा रात्रीमें जागरण-के कारण थका हुआ निद्रित हुआ है। इसलिये शीघ्र रामकोही यहां ला।

समास ।

१ कैकेयीवचनं=कैकेय्याः वचनं कैकेयीवचनं (कैकेयीका भाषण)

२ विधवा=विगतः मृतः धवः पतिः यस्याः सा विधवा पतिहीना मृतपतिका स्त्री। (जिसका पति मर चुका है)

३ राजमंदिरं=राज्ञः मंदिरं राजमंदिरं (राजाका भवन)

४ भग्नहृदयः= भग्नं हृदयं यस्य सः भग्नहृदयः (जिसका हृदय छिन्नभिन्न हुआ है)

५ मंत्रज्ञा=मंत्रं जानाति इति मंत्रज्ञा (विचारका भाव जाननेवाली)

६ प्रजागरपरिश्रान्तः=प्रकर्षेण अतिशयेन जागरः जागरणं प्रजागरः। परितः सर्वतः श्रांतः पतिश्रांतः। प्रजागरेण परि-श्रांतः प्रजागरपरिश्रांतः। (जागरण करनेके कारण थका हुआ)

पाठक समासोंका अभ्यास अच्छा करें। तथा इस पाठके वाक्यों-काभी अभ्यास अच्छा करें। और जब संपूर्ण पाठ हो जाय तब केवल वाक्यही वारंवार अनेक समय पढते रहें।
